मिस्त्र की सभ्यता
(EGYPTION CIVILIZATION)

सिकन्दर का संक्षिप्त जीवन परिचय (Brief biography of Alexander)—मेसीडोनिया (मकदूनिया) के राजा (क्षत्रप) फिलिप द्वितीय एवं उनकी रानी आलिम्पियाज/ओलंपियाज्ता के यहाँ सिकन्दर का जन्म हुआ। फिलिप 356 ई. पू. बाईस वर्ष की अवस्था में शासक बना और उसने आस-पास विकसित सभ्यताओं से सम्पर्क हेतु राज्य का विस्तार किया। अरस्तू को फिलिप ने अपने पुत्र सिकन्दर का दार्शनिक गुरु नियुक्त किया। फिलिप का मानना था कि व्यक्तित्व विकास के लिए दर्शनशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है। अरस्तू की प्रेरणा से ही सिकन्दर समस्त विश्व में यूनानी सभ्यता का प्रचारक बन गया। प्लूटार्क बताता है कि सिकन्दर एक जिज्ञासु प्रवृत्ति का बालक था एवं ज्ञान पिपासु था। सिकन्दर (अलेक्जेंडर द ग्रेट) की दिग्विजय के फलस्वरूप हेलेनिस्टिक सभ्यता (काल) का सूत्रपात हुआ। चूँकि आलिम्पियाज एक कुशाग्र मस्तिष्क की महिला थी, फलतः उसके पुत्र ने भी तीक्ष्ण मेधा पाई एवं प्रत्येक क्षेत्र में अपनी व्युत्पन्न बुद्धि का परिचय दिया। उसे साहसिक कार्यों से प्रेम था। आलस्य अथवा अकर्मण्यता से सख्त घृणा थी । उसका भोजन, आहार-विहार संयमित था । इसीलिए उसका व्यक्तित्व श्लाघनीय था ।

वैज्ञानिक अनुसन्धान को सिकन्दर ने विशेष रूप से प्रोत्साहित किया। मिस्त्र की सभ्यता का विकास नील नदी के आस-पास हुआ था । सिकन्दर ने इस नील नदी के स्त्रोत को ज्ञात करने हेतु योग्य वैज्ञानिकों का एक मण्डल नियुक्त किया। मिस्त्र की कुँजी कहे जाने वाले 'पेलुसियम' बन्दरगाह से उसने आस-पास का क्षेत्र विजित किया। रोड्स के प्रख्यात वास्तुकार डेनोक्रटीज के पर्यवेक्षण में उसने सर्वश्रेष्ठ नगर सिकन्दरिया बसाया। इस तरह मिस्त्र की सभ्यता सम्बन्धी कई साक्ष्य प्रकाश में आने लगे।

Scanned with OKEN Scanner

सिकन्दर को इतिहास में रुचि थी। उसके साथ कई इतिहासकार रहते थे। कर्टियस, प्लूटार्क, एरियन, डियोडोरस एवं पालिवियस की रचनाओं में मिस्र एवं हेलेनिस्टिक सभ्यता से सम्बन्धित कई जानकारियाँ मिलती हैं। मिस्र के उत्खनन में हेलेनिस्टिक काल के कई यूनानी लेख मिलते हैं। पालिवियस को इतिहासकारों का भी इतिहासकार कहा जाता है। उसके ग्रन्थ 'हिस्टरीज' से तत्युगीन सभ्यताओं की महत्वपूर्ण एवं प्रमाणिक जानकारी मिलती है। कहा जाता है कि इस ग्रन्थ के 40 भाग थे मगर मात्र 5 भाग ही उपलब्ध हो सके हैं।

डियोडोरस ने अपने ग्रन्थ 'हिस्टारिकल लिबर्टी' में अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों की सूची दी है। हायरोनिमस, फिलार्कस, पोसिडोनियस एवं निकोलस आदि इतिहासकारों के ग्रन्थ भी तत्युगीन इतिहास की जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। बेबीलोन तथा मिस्र के बेरोसस तथा मनेथे नामक पुरोहितों ने भी अपने देश का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया है। टालमी प्रथम के संरक्षण में हेकाटोस ने मिस्र का इतिहास लिखा। इस प्रकार यही वह समय था जब इतिहासकारों ने विभिन्न देशों एवं सभ्यताओं का इतिहास लिखा। इनसे बेबीलोनिया एवं मिस्र की सभ्यता की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इस काल के यात्रियों ने अपने यात्रा विवरण भी लिखे जो उस समय की सभ्यताओं पर प्रकाश डालते हैं। (नियाकर्स ने भारतवर्ष से लेकर बेबीलोन तक अपनी समुद्री यात्रा का रोचक वर्णन किया है।) महान भूगोलवेत्ता टॉलेमी मिस्र का निवासी था उसके ग्रन्थ भी मिस्र की सभ्यता को जानने में उपयोगी हैं।

भूगोलवेत्ता इरैटोस्थनीज ने दजला-फरात घाटी (मेसोपोटामिया की सभ्यता के उद्गम स्थल) का वर्णन प्रस्तुत किया है। उसने विश्व का मानचित्र भी बनाया। भूगोल के पण्डित कहे जाने वाले डिकार्कस ने भी विश्व का मानचित्र बनाया था। इनके अलावा भूगोलवेत्ता एगाथर्काइडीज, पोसिडोनियस एवं स्ट्रैवो के विवरण भी महत्वपूर्ण हैं।

आधुनिक इतिहासकारों में जेम्स हेनरी ब्रेस्टेड ने अपनी कृति 'कॉन्क्वेस्ट ऑफ सिवलाइजेशन' में मिस्र की सभ्यता पर प्रकाश डाला है। वह बताते हैं कि प्राचीन मानव को नील नदी की घाटी चौड़ी होने के कारण, पशुओं को पकड़ना एवं आखेट करना अपेक्षाकृत सरल था । जे. बी. प्रिचाई ने अपनी कृति 'एनशेण्ट नियन ईस्टर्न टेक्स्टम रिलेटिंग टू दी ओल्ड टेस्टामेंट (प्रिंसटन, 1955)' में भी मिस्र की सभ्यता पर प्रकाश डाला है। साथ ही यह कृति नक्षत्रों की स्थिति के बारे में भी अध्ययन प्रस्तुत करती है। इतिहास के जनक हेरोडोरस की कृतियों में भी मिस्र की सभ्यता का वर्णन मिलता है। सबाटिनो मोसकाटी की कृति 'द फेस ऑफ द एन्शियेन्ट ओरिएण्ट' भी मिस्र की सभ्यता पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। इसी प्रकार सिरिल मालड्रेड की कृति 'द इजिण्टिशियन्स' भी मिस्र की सभ्यता की जानकारी की महत्वपूर्ण स्रोत है।

Scanned with OKEN Scanner